

नन्दी की पीठ का कूबड़

दामोदर धर्मानंद कोसांबी



The Hump On Nandi's Back

D. D. Kosambi

नन्दी की पीठ का कूबड़

दामोदर शर्मानंद कोसाम्बी



The Hump On Nandi's Back

D. D. Kosambi

नव जनवाचन आंदोलन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने 'सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट' के सहयोग से किया है।

इस आंदोलन का मकसद आम जनता में पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।



नन्दी की पीठ का कूबड़
दामोदर धर्मनंद कोसाम्बी

The Hump On Nandi's Back
D. D. Kosambi

हिंदी अनुवाद
अरविन्द गुप्ता

Hindi Translation
Arvind Gupta

कॉपी संपादक
राधेश्याम मंगोलपुरी

Copy Editor
Radheshyam Mangolpuri

रेखांकन
कैरन हेडॉक

Illustration
Karen Haydock

कवर डिजाइन और लेआउट

अमय कुमार झा

Cover Design & Layout
Abhay Kumar Jha

प्रथम संस्करण
मार्च 2008

First Edition
March 2008

सहयोग राशि
15 रुपये

Contributory Price
Rs. 15.00

मुद्रण
अवनीत ऑफसेट प्रेस
नई दिल्ली - 110 018

Printing
Avneet Offset Press
New Delhi - 110 018

Publication and Distribution

Bharat Gyan Vigyan Samiti

Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket, New Delhi - 110017

Phone : 011 - 26568943, Fax : 91 - 011 - 26569773

Email : bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com

BGV'S MAR 2008 1K 1500 NIVA 0146/2008

नन्दी की पीठ का कूबड़

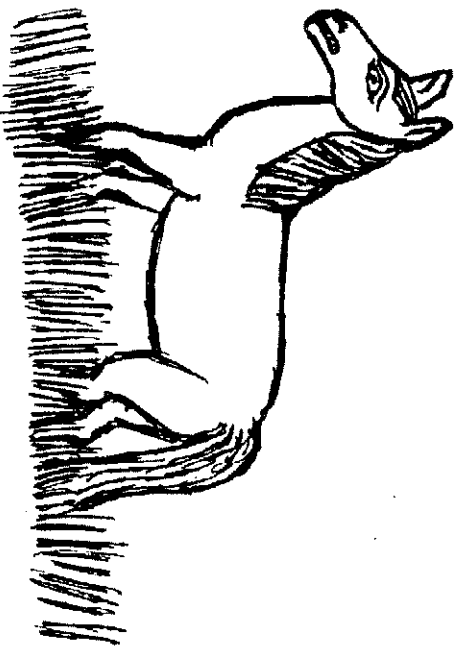
[गांव के वार्षिक मेले का अवसर है। उसमें जानवरों की खरीद-फरोख्त का अच्छा कारोबार होगा। गांव के मुखिया का बेटा राम, सुबह-सुबह अपने नन्दी बैल को चराने ले जाता है। शाम को नन्दी जानवरों के जलूस की अनुवाई करेगा। जंगल के एक छोर पर तालाब है। धीरे-धीरे वहां बूढ़े पीपल के पेड़ के नीचे राम के बहुत से मित्र इकट्ठे हो जाते हैं। वे सभी एक सवाल का जवाब खोजने की कोशिश करते हैं - भारतीय बैलों के पीठ पर कूबड़ क्यों होता है?]



The Hump On Nandi's Back

(It is the day of the annual cattle festival. Rama, son of the village headman, takes their great bull Nandi to graze, before the cattle procession in the evening. Near a pond at the edge of the forest, beneath the Bo tree of the village god, his friends of the jungle join him, one by one. They try to answer the question why have Indian cattle humps on their backs).

राम : “नन्दी! यह बताओ कि बैलों की पीठ पर ही कूबड़ क्यों होता है? जरा भैंस को देखो। और उधर घोड़े को देखो। उनकी पीठ तो एकदम चपटी है।”



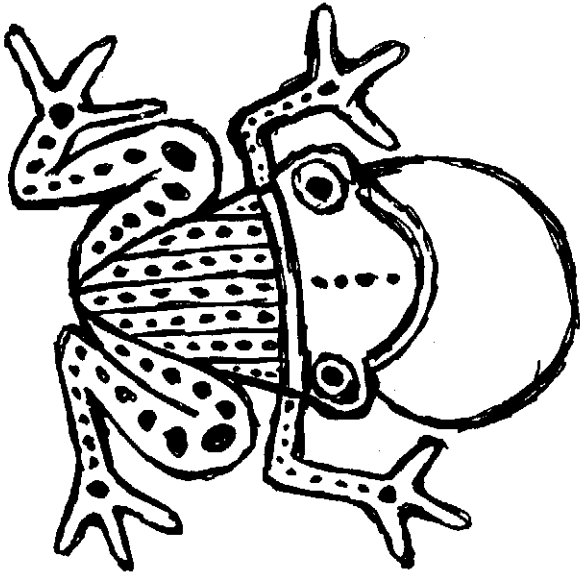
Rama: “Nandi! Why is it that only cattle have humps on their backs? Look at that water buffalo. See that horse. Their backs are flat.”

तभी राम का कुत्ता मोती दौड़ता और हांफता हुआ आया। मोती ने कहा, “भौं, भौं! क्या तुम्हें पता है - जब मैं बिल्ली को पकड़ने दौड़ता हूँ तो वह अपनी पीठ मेहराब जैसे ऊपर उठाती है। नन्दी की पीठ के साथ भी शायद यही हुआ होगा। उसे किसी ने डराया होगा।” उसके बाद मोती और नन्दी पानी पीने चले गए।



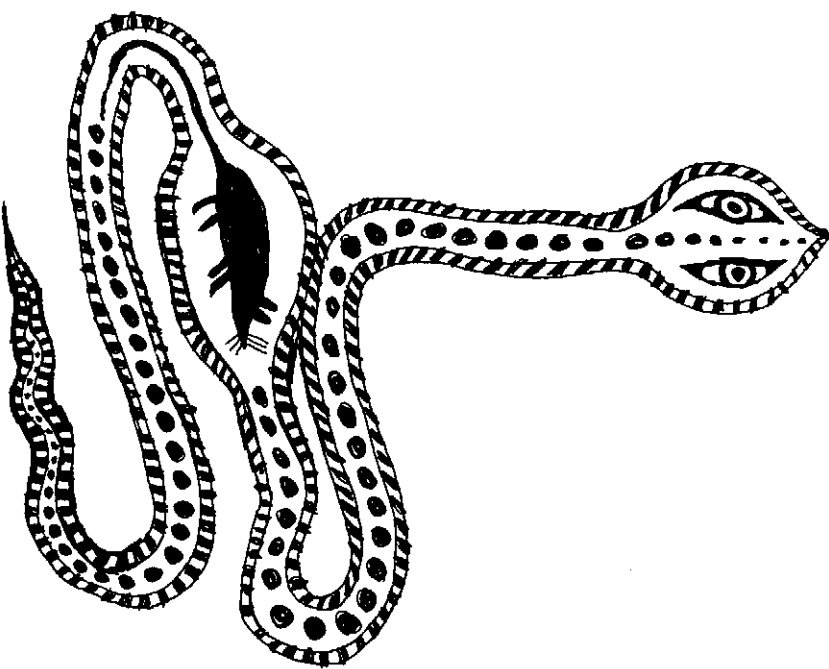
Just then Rama's dog Moti came bounding up, panting in his haste. He said, “Bow, wow! You know how our cat arches up when I chase her. That must have happened to Nandi's back too. Something scared him.” Moti and Nandi went to drink at the water trough.

“टरा! टरा! टरा!” मेंढक पानी से कूदते हुए टरीया। “हमारे बहादुर नन्दी को डराना काफ़ी मुरिकल काम है। कुछ दिन पहले शेर ने पूरा रम लगाया, फिर भी उसे भगा नहीं पाया। अब सब देखो – मैं कैसे फूलकर कुप्पा होता हूँ। मुझे लगता है कि नन्दी ने मेरी तरह ही अपने कूबड़ में हवा भर ली होगी।”



“Chug-a-urn-urn-urn!” a frog croaked, leaping out of the water. “What scares our Nandi? The other day even Sher the tiger couldn’t drive him away. Now see how I swell up. Nandi must have filled the hump with air, like me.”

यह सुनकर बूढ़ा नाग पीपल के पेड़ की जड़ के बिल में से बाहर निकला। “हिसा! हिसा!” उसने फुंकारते हुए कहा, “हवा से सिर्फ़ छाली भरती है, पीठ नहीं। मैंने एक बार मोटा चूहा निगाला और फिर मैं पूरे हफ़्ते सोता रहा। तब मेरा शरीर भी बीच में फूल गया था। नन्दी ने भी जरूर कोई मोटी चीज निगाली होगी।”



Old Naag, the Cobra crawled slowly out of his hole at the root of the Bo tree. “Hiss! Hiss! Air fills up the chest, not the back. Once I swallowed a big rat and slept for a week. There was a great lump about my middle. Nandi gulped down something big, sure enough.”

“हा! हा! हा!” भातू चीखते हुए जंगल में से बाहर आया। “नन्दी हमेशा छोटी-छोटी चीजें ही खाता है। तुम्हें क्या लगता है - उसने एक बड़ा कद्दू निगला है? पिछले साल मैंने मधुमक्खियों के छत्ते से शहद चुराया था। उसके बाद मधुमक्खियों ने मुझे जमकर काटा। उससे मेरा चेहरा एक तरफ बुरी तरह से फूल गया। मुझे लगता है कि हमारे नन्दी को भी किसी ने काटा होगा।”



“Ho, ho hoi!” roared Bhalu the bear, coming out of the forest. “Nandi takes one little bite at a time. You think he swallowed a big pumpkin, do you? Last year, I robbed a beehive. The bees stung me good and hard. What a swelling I had on one side of my face. Sure, sure! Nandi was stung.”

इसी बीच बंदर भी पीपल के पेड़ से कूदता हुआ नीचे आया। “खो! खो! खो! देखो, इस पेड़ के फल खाने के बाद मेरे नीचे के गाल किस तरह फूल जाते हैं। नन्दी घास चरता है। उसने जरूर उस घास को अपने कूबड़ में छिपाया होगा। छिपी घास को ही वह बाद में धीरे-धीरे करके चबाएगा। देखो, वह कैसे घास की जुगाली कर रहा है?”

“तुम आखिर एक लालची बंदर की तरह ही बोले,” गम ने कहा- “देखो, नन्दी का कूबड़ हमेशा एक-जैसा ही रहता है। फल खाने के बाद तुम्हारे गाल एकदम पिचक जाते हैं। पर नन्दी का कूबड़ बिल्कुल एक-समान ही रहता है।”



Monkey came down with a leap from the Bo tree. “Whoop, whoop, whoop! Look how the pouches under my jaw swell by suffering this tree’s fruit. Nandi must have stored the grass he was grazing. If he hasn’t put it in that hump of his, how does he get it back to chew his cud? Look he is chewing the cud.”

“Spoken just like a greedy monkey,” said Rama. “That hump is always the same size. Your pouches flatten out as you eat the fruit. Why doesn’t Nandi’s hump go down then? Look Nandi, you tell us about the hump.”

नन्दी ने कहा, “मुझे लगता था कि जिस प्रकार सभी बैलों के सींग होते हैं वैसे ही सभी बैलों का कूबड़ भी होता होगा। कल मुझे जिला स्तरीय प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार मिला। वहां पर यूरोप से लाए कुछ बैल भी थे। मुझे वे बैल कुछ अजीब लगे। उनके सींग न थे और उनकी पीठ एकदम चपटी, सपाट थी। यूरोप के बैल एक-दूसरे से फुसफुसाकर कह रहे थे, ‘जरा देखो उस कुबड़े बैल को, जिसे पहला ईनाम मिला है!’ मुझे इस सबके पीछे मनुष्य की ही कारिस्तानी नजर आती है। पीठ में कूबड़ के कारण बैल पर हल का जुआ अच्छी तरह बैठता है। कूबड़ के कारण ही मैं हल और बैलगाड़ी को बेहतर तरीके से खींच पाता हूँ। यूरोप के बैलों ने मुझे बताया - उनके देशों में जुलाई के लिए पहले घोड़ों का उपयोग होता था। अब खेतों की जुलाई मशीनों द्वारा जाती है।”



Nandi said, “I used to think that all cattle have that hump, just as they have horns. But yesterday I took first prize at the district exhibition. There they had brought some European cattle. Very funny they looked to me! No horns, and queer flat backs. They were muttering to each other. “Just look! First prize to that big hunch backed bull! I think that you humans must have done something to us cattle. The yoke fits easier with this hump. I can draw the cart or the plough better. Those cattle told me: In their country they hitch up horses. And now machines do the work.”

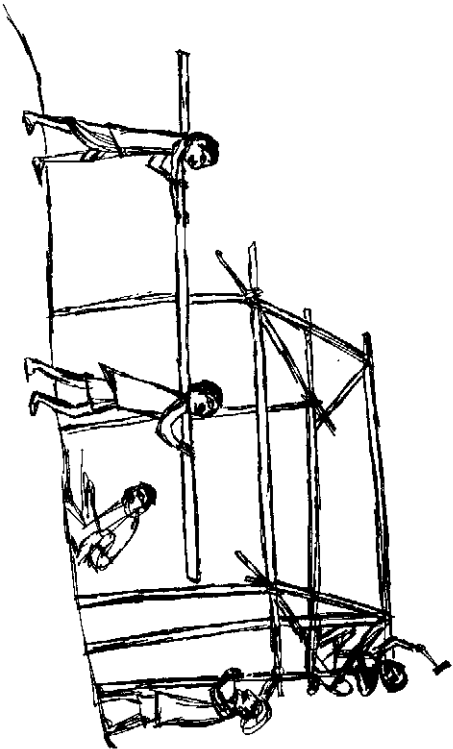
राम ने इससे असहमति जताई : “इस पुस्तक के अनुसार भगवान शिव नन्दी की सवारी करते हैं। भगवान ने नन्दी की पीठ पर कूबड़ इसलिए बनाया जिससे वह उसपर झुककर कुछ आराम कर सकें। देखो, इस चित्र में भगवान कितनी आसानी से नन्दी पर सवारी कर रहे हैं। हमारे गांव का कुलदेवता तो स्वयं यह पीपल का पेड़ है। चलो, अब पीपल के पेड़ से ही नन्दी के कूबड़ का कारण पूछते हैं।”



Rama didn't agree: “This book says that our god Shiv rides Nandi. The god made a hump on Nandi's back to lean on in comfort. Look, here is a picture of the god, riding at ease. Now our village god is in this very Bo tree. Come, let us ask the Bo tree about Nandi's hump.

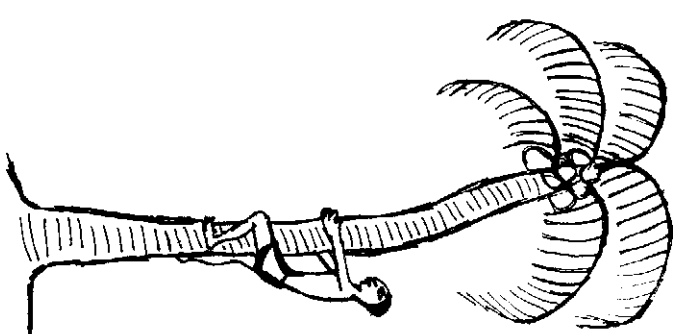
The old Bo tree replied: “Nandi is right. Man made cattle like him. Man made dogs like Maiti. Man made rice and wheat. Man made himself what he is, at the same time.”

राम : “यह कैसे सम्भव है? हमारा नया घर पिछले वर्ष बना था। कई लोगों ने उसे मिलकर बनाया था। उसके लिए पेड़ों को काटा गया। फिर लट्टों और तख्तों को लम्बाई में काटा गया। इसके लिए कई लोगों को मेहनत करनी पड़ी। उसके बाद पूरे फ़ेम को कीलें ठोककर जोड़ा गया। मैंने छत पर फ़ूस बिछाने में अपने पित्तजी की मदद की। परंतु हमने नदी को कैसे बनाया? वह छोटे बछड़े जैसा पैदा हुआ था और तभी से उसके पीठ पर कूबड़ है। दो साल पहले मोती एकदम छोटा पिल्ला था। मैंने बस इतना ही किया कि मां से निगाह बचाकर अपनी शाली में से मोती को कुछ अपना खाना खिलाया। हमने तो मोती को कुत्ता नहीं बनाया। अनाज पैदा करने के लिए हमने खेत में सिर्फ बीज बोए। इससे बस चार महीने में हमें उसी प्रकार का बहुत सारा और अनाज मिला। हमने तो वह अनाज नहीं बनाया।”



Rama: “How can that be? Our new house was built last year. Men made that. Trees had to be cut down. The logs and planks were sawn to length. That took many men. The whole frame was nailed together. I helped father put on the thatch. But how did we make Nandi? He was born a little calf, with a hump on his back. Moti was only a pup, year before last. All I did was to feed him a little extra from my plate when mother wasn't looking. We didn't make him a dog. The grain was planted from the seed. In four months, we got lots more grain just like it. No one made that.”

पीपल का पेड़ : “राम, तुम एक बहुत हीशियार लड़के हो। यही सीखने का अच्छा तरीका है - बस प्रश्न पूछते रहो। तब तक प्रश्न पूछो जब तक तुम सच की जड़ तक नहीं पहुंचो। अब ध्यान से सुनो। मैं तुम्हें वही बताते जा रहा हूँ जिसे मैंने खुद अपनी आंखों से देखा है। आज से हजारों साल पहले मनुष्य लगभग उसी तरह रहते थे जैसे आज तुम्हारा मित्र बंदर रहता है। वे भोजन और फलों के लिए पेड़ों पर चढ़ते। वे बेर और कुकुरमुते तोड़ते। वे जमीन के अंदर से कंद खोदकर निकालते। मनुष्य बिल्कुल भालू की तरह ही शहर इकट्ठा



Bo tree: “Rama, you are a bright lad. This is the way to learn. To go on asking questions till you get at the truth. Now listen carefully. Let me tell you what I saw with my own eyes. Thousands of years ago, men lived almost like your friend monkey. They climbed trees for fruits and nuts. They plucked berries and mushrooms. Yams came out of the ground. Like Bhalu they would gather honey. They caught fish just as Bhalu

करते। वे कभी-कभी भालू की तरह ही अपने पंजों से मछलियों का शिकार करते। वे मांस के लिए अन्य जानवरों का शिकार करते। तब न तो आग थी, न हल और न ही घर और झोपड़ियां। तब गांव भी नहीं थे। फिर ग्राम-देवता का सवाल ही पैदा नहीं होता है। लोग इधर-उधर से भोजन एकत्र कर अपना जीवन चलाते थे। परंतु अब लोग अपना भोजन उगाते हैं।”

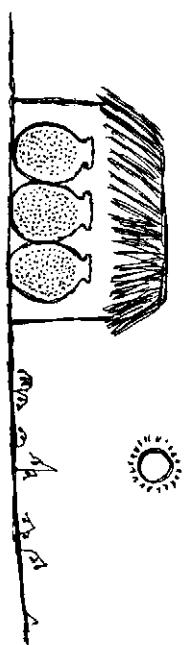
राम : “पर अगर हम इस प्रकार जी सकते थे तो फिर हमने क्यों भोजन उगाया? देखो, मेरे पिता और बड़ा भाई खेतों पर कितनी मेहनत करते हैं! क्या हम इतनी मेहनत किए बिना जिन्दा नहीं रह सकते?”



does with his paws, sometimes. They would kill other animals for meat. No fire, no plough, no houses or huts. There were no villages. Of course no village gods. They just lived by gathering food. Now they make it grow.”

Rama: “But if you can live like that, why grow food? Look how hard father and my elder brother work in the fields. Why can't we live without such hard work?”

पीपल का पेड़ : “हर समय पर्याप्त मात्रा में भोजन इकट्ठा करना सम्भव नहीं होता है। कभी-कभी सूखा पड़ता है जिससे नदी-नाले सूख जाते हैं। मछलियां मर जाती हैं। शिकारी जानवर दूर-दराज चले जाते हैं। फल भी नहीं मिलते हैं। एक बात और है - पूरे साल भर चीजें इकट्ठी करना सम्भव नहीं होता है। इसान को भोजन इकट्ठा करके उसे संभाल-संजोकर रखना सीखना पड़ा। बारिश के बाद की फसल अक्सर बहुत अच्छी होती है। आप पूरे साल उस फसल का अनाज खा सकते हैं। अगर अधिक उपज होगी तो उससे ज्यादा लोग जीवित रह पाएंगे। मैं अपनी सबसे ऊपर की टहनी से पांच बड़े गावों को देख सकता हूँ। पुराने जमाने में इस पूरे इलाके में मुझे पांच लोग भी नजर नहीं आते थे।”

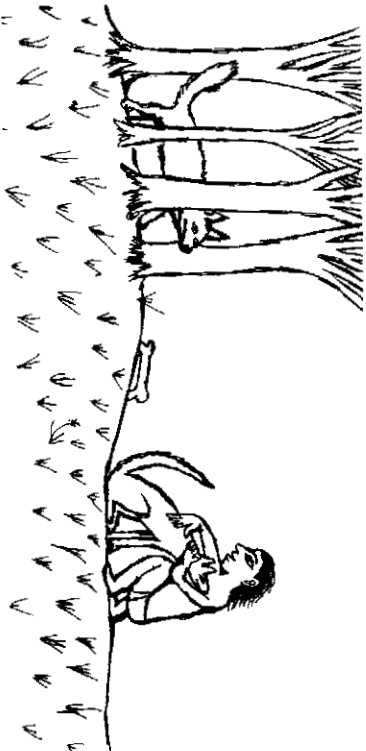


Bo tree: “You can't always gather enough food. There are bad years when the streams dry up. No fish. The game moves away. There is no fruit. Besides, you don't gather things all the year round. Man had to learn how to store food. You get some good crops after the rains. Then you eat the grain for the whole year. If you grow good crops, more men can live. From my top branch, you can see five big villages. In the old days, I couldn't see even five humans in all that land.”

राम : "ठीक है। पर लोगों ने भेरे मोती जैसे कुत्ते क्यों बनाए?"

पीपल का पेड़: "पुराने जमाने में शिकार के समय भेड़िये भी आदिमियों की तरह शिकार का पीछा करते थे। यह देख मनुष्यों ने कुछ भेड़ियों के बच्चे को पाला। इनमें से अधिकतर बड़े होकर दुबारा जंगली भेड़िये बने और चले गए। परंतु उनमें से कुछ मनुष्यों के साथ रहने लगे। वे लोगों के लिए शिकार का पीछा करने लगे। इसके बदले में लोग उन्हें बचा हुआ मांस और हड्डियां खाने को देते। इस प्रकार जंगली भेड़िये पालतू बने। अब हम उन्हें कुत्ते के नाम से जानते हैं।"

राम : "मुझे खुशी है कि लोगों ने ऐसा किया। अगर मोती नहीं होता तो मैं भला क्या करता? परंतु नन्दी की पीठ पर कूबड़ किस तरह आया? शायद वह शुरु से ही था। मुझे अभी तक इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिला।"

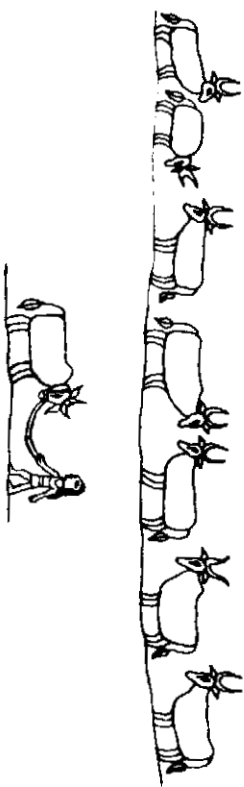


Rama: "All right. But how and why did they make dogs like my Moti?"

Bo tree: "In hunting, wolves used to follow the game, just like men. Men tamed some of the cubs. Mostly, when the cubs grew up, they became wild wolves again. But some stayed with man. They chased wild game for him. Men fed them with scraps of meat and the bones. So you got a tame wolf. You call him Dog."

Rama: "I am glad they did that. What would I do without Moti? But what about the hump on Nandi's back? We started with that. And you haven't told me the answer yet."

पीपल का पेड़ : "मनुष्यों के लिए जंगली हिरणों का लगातार पीछा करना काफी कठिन काम था। गाय-बैल भी जंगली जीव थे। परंतु वे भीमी गति से चलते थे। मनुष्य मांस के लिए उनका पीछा करते। कुछ समय बाद उन्होंने मोती की तरह ही कुछ गाय-बैल के बछड़ों को भी पालतू बनाया। इसके लिए उन्होंने सबसे तगड़े बछड़ों को चुना। उनमें से कुछ की पीठ पर छोटा कूबड़ था। कूबड़ के कारण लोगों को अधि क मांस मिलता था। इसके लिए वे लगातार कूबड़ वाले बछड़ों को चुनते रहे और उन्हें भरपेट खाने को देते रहे। इससे धीरे-धीरे कूबड़ बढ़ा होने लगा। मनुष्यों को कूबड़ वाले गाय-बैलों को पालतू बनाना ज्यादा आसान लगा। गायें दूध देतीं। अब धीरे-धीरे लोग शिकार करने की बजाय गाय-बैल पालने लगे। इस तरह धीरे-धीरे नन्दी जैसे बड़े कूबड़ वाले बैल विकसित हुए।"



Bo tree: "Men found it hard to chase wild deer all the time. But cattle too ran wild. Cattle moved more slowly. Men followed them for meat. Then they found that some calves could be tamed, just like Moti. They took the fattest. A few had small humps. A hump gives more meat. So, they just went on picking out the humped calves, and fed them. That way, the hump grew bigger. But men found that these humped cattle tamed more easily. The cows gave milk. Instead of hunting, men began to pasture herds. That is how you get big cattle with fine humps, like Nandi."

राम : “यह तो बहुत होशियारी की बात है। पर यह अनाज कैसे विकसित हुए?”

पीपल का पेड़ : “सदियों पहले मैंने लोगों को भूख मिटाने के लिए पत्ते और घास के बीज खाते हुए देखा था। इसके अलावा खाने को कुछ और नहीं था। धीरे-धीरे उन्होंने सबसे मोटे बीजों को छोटकर अलग किया। सभी घासों एक-वैसी नहीं होती हैं। लोगों ने पाया कि अच्छी घासों सबसे मुलायम और नर्म मिट्टी में ही अच्छी उगती हैं। मुलायम मिट्टी सभी जगह नहीं मिलती है। परंतु अगर कंद को एक नुकीली छड़ से खोदकर निकाला जाए तो अगले साल उस जगह पर अच्छी घास उगेगी। इसी कारण लोगों ने मोटी घास के बीजों को बोने के लिए जमीन में गड्ढे खोदने शुरू किए। लोग अगली फसल के लिए हमेशा सबसे मोटे बीज ही बोते।”

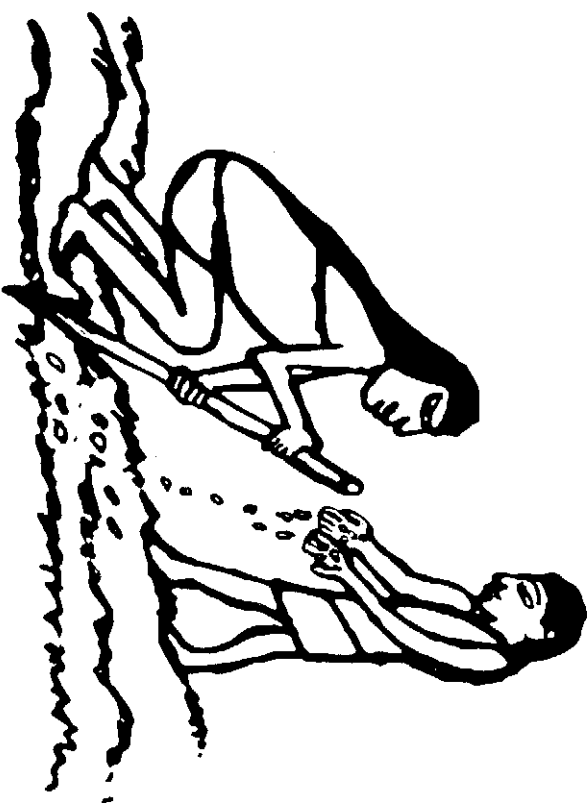


Rama : “That was clever too. Now what about grain?”

Bo tree: “Ages ago, I used to see man eat leaves and grass seeds in times of hunger. They got nothing else. Soon, they learned to pick out the fattest grass seeds. All grasses are not alike. Man found that these nice grasses grew best in soft ground. You don't get soft ground very often. But if you dig up yams with a sharp stick, the grass grows better there next year. So, man made holes in the ground for fat grass seeds. Always, they picked out the biggest seeds to plant next time.”

राम : “हम अनाज के बीजों को तो इस तरह नहीं बोते हैं। हम हल से खेत जोतते हैं। लोगों ने हल का उपयोग करना कैसे सीखा?”

पीपल का पेड़ : “इसे सीखने में उन्हें बहुत समय लगा। पहले उन्होंने नुकीली छड़ से जमीन की सतह को खुरचा। परंतु उससे कोई खास फायदा नहीं हुआ। वैसे, कच्चा अनाज खाने में बहुत अच्छा नहीं होता। इसके लिए इसान ने आग की जानकारी हासिल की। शुरू में उन्हें जंगल की भीषण आग से डर लगता था। वे आग और जंगली जीवों

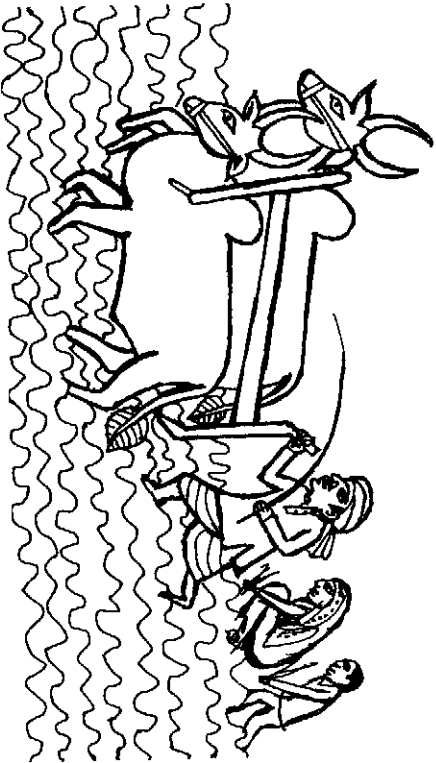


Rama: “We don't plant grain that way. We use the plough. How did people learn to use that?”

Bo tree: “It took them a long time. Firstly, they scratched the ground with a stick. That didn't help much. Also, raw grain isn't good to eat. Men had to find out about fire. They were afraid of the big forest fires. Men ran away from the fire just like animals. Then they cooked food. With fire, they could make clay pots too. For big furrows, they needed someone

को देखकर डर से भागते थे। फिर उन्होंने खाना पकाना सीखा। वे आग से मिट्टी के बर्तन पका पाए। जमीन की गहरी जुताई के लिए उन्हें ऐसी चीज की जरूरत थी जो अधिक ताकत से खींच सके। तब उन्होंने हल के टेंड़े फल को खींचने के लिए बैलों का इस्तेमाल करना शुरू किया। हल को खींचने के लिए मनुष्य को बड़े जानवरों की जरूरत थी। इसलिए उन्होंने जानवरों को मांस के लिए मारना बंद किया। इस प्रकार उन्हें नन्दी जैसे बड़िया और ताकतवर बैल मिले।”

राम : “जरा कल्पना करो मेरे नन्दी को मारने की! कितनी बेवकूफी की बात है। पर अभी आपने मनुष्य द्वारा खुद अपने निर्माण का जिंक किया था।”



strong to pull. So, they started trying cattle to the big, crooked furrow stick. That way, you get more food too. But men needed bigger cattle. So, they stopped killing them for food and got fine strong bulls like Nandi.”

Rama: “Just fancy eating my Nandi. How stupid. But you said something about man making himself. I thought the gods did that.”

पीपल का पेड़ : “मैंने अभी तुम्हें बताया कि किस प्रकार मनुष्य को आग ने भयभीत करना बंद किया। शुरू में लोग आग को भगवान के रूप में पूजते थे। धीरे-धीरे इंसानों ने आग बनाना सीखी। इसके लिए उन्होंने दो सूखी लकड़ियों को आपस में रगड़ा। फिर उन्होंने मुझे और नन्दी को पूजना शुरू किया। हमने मनुष्य को भोजन दिया। मेरे फल अभी भी खाने योग्य हैं। परंतु अब लोगों को मेरे छोटे भाई अंजीर के फल ज्यादा स्वादिष्ट लगते हैं। अंजीर आकार में बड़ी और मीठी होती है। जैसे अंजीर का पेड़ छोटा और कमजोर होता है। उसे अच्छी मिट्टी की जरूरत होती है और साथ में ढेर पानी की भी। जंगल की सफाई, कटाई हुई। लेकिन मैं भाग्यवश बच गया। कई बार जंगल में आग लगी और मेरे परिवार के तमाम सदस्य मारे गए। मैं कई बार बाल-बाल बचा। लोग आज भी आग, नन्दी और मेरी पूजा करते हैं। पर अब यह पूजा-उपासना कम हो रही है। हमने मनुष्य को नहीं बनाया। मैं यह बात स्पष्ट करना चाहता हूँ।”



Bo tree: “I told you how man stopped being afraid of fire. First he used to worship Fire as a god, too. Soon, humans found out how to make fire. They rubbed two sticks together. Then they started worshipping me and Nandi. We gave them food. My fruits are still good to eat. But man likes my little cousin Fig better. Figs are larger and sweeter. Only, fig is a small tree, very weak. He needs good soil. Lots of water too. The jungle has to be cleared. I grew by myself. Many times, the forest fires burned down the rest of my family. I always grew again. People still worship the fire and me, and Nandi. But not so much. We did not make man, I tell you.”

राम : “फिर किसने बनाया?”

पीपल का पेड़ : “वर्तमान मनुष्य को खुद उसने ही बनाया है। शुरू में वह छोटा और बंदर जैसा अच्छा दोस्त था। परंतु वह निस्सहाय था। आग के बाद उसने धातुओं को खोजा। पहले तांबा। फिर लोहा। उससे पहले मनुष्य ने पत्थरों के औजार बनाए। लोगों ने शिकार के लिए तीर-कमान बनाए। उन्होंने भोजन को संचित कर सुरक्षित रखने के लिए टोकरियां और चमड़े के थैले बनाए। मछलियां पकड़ने के लिए जाल बनाए। इस प्रकार लोगों को अधिक भोजन मिल पाया। खेती-बाड़ी की कठिन मेहनत ने मनुष्य को बलवान बनाया। लोग अपने सिर पर भारी बोझ ढोने लगे। इस कारण लोग सीधे खड़े होकर चलने लगे। लोगों ने झोपड़ियां और घर बनाए। वे कपड़े पहनने लगे। पुराने जमाने में कई बड़े-बूढ़े मनुष्य भी मेरी छांव तले नंगे रहते थे। बिल्कुल वैसे ही जैसे तुम बचपन में नंग-धड़ंग घूमते थे।”

राम : “गर्मी के दिनों में मुझे अभी भी कपड़े बिल्कुल नहीं सुहाते हैं। परंतु मेरी मां मुझे नंग-धड़ंग दौड़ने से मना करती है। अब मुझे आप एक बात और बताएं। यह भगवान कब आए?”

Rama: “Then who did?”

Bo tree: “Man made himself what he is. In the beginning, he was a nice small, friendly creature like Monkey. But helpless. After fire, he found out about metals. First copper. Then iron. Before that, he made his tools of stone. He made bows and arrows for hunting. He made baskets and leather bags for storing food. Nets for fishing. That way he got more food. The heavy work of farming made him strong. He carries head loads. That makes him walk upright. He made huts and houses. He wears clothes. In the old days, even grown up people lived in my shade naked. Just like you, when you were a baby.”

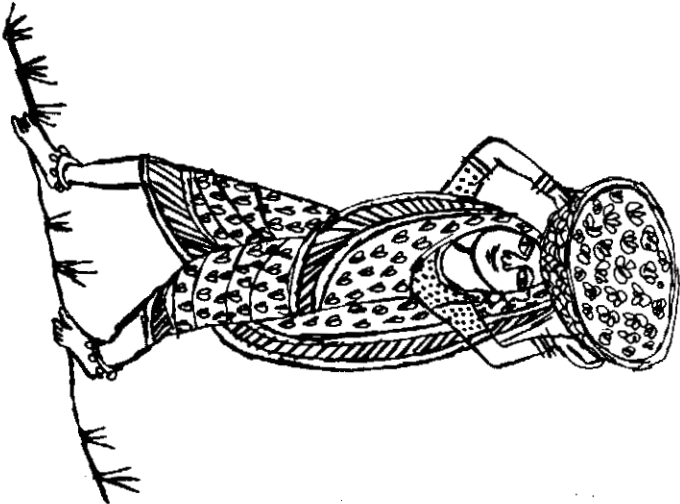
Rama: “I still don't like many clothes when it is hot. But mother says not to run about bare. Now tell me one more thing. When did the gods come?”

पीपल का पेड़ : “पहले लोगों ने चीजों के उगने के बारे में जाना। उन्होंने उगती चीजों को अपने उपयोग के लिए इकट्ठा किया। इससे लोगों को लगा कि सभी चीजों को कोई महान माता जन्म देती है। हम अभी भी कहते हैं, ‘पृथ्वी हमारी माता है।’ फिर इंसान ने इकट्टी की गई चीजों से कहीं ज्यादा चीजें खुद बनाना सीखीं। तब उसने सोचा, ‘मुझे भी किसी ने बनाया होगा?’ तब इंसानों ने भगवान को जन्म दिया। लोगों ने कहा, ‘भगवान ने हर चीज बनाई है।’ परंतु मुझे असली सच पता है। मैं मनुष्य के सभी भगवानों से अधिक बूढ़ा हूँ। मैंने मनुष्य को स्वयं खुद का निर्माण करते हुए देखा है। उसे अभी इस काम को और आगे बढ़ाना है। वह कभी-कभी मनुष्य जाति के अन्य लोगों के साथ बहुत क्रूर व्यवहार करता है।”



Bo tree: “First, man found that things grew. He gathered them for his own use. So, he thought that everything was born from some great mother. We still say, ‘This Earth is our Great Mother.’ Then man learned to make many more things than he picked up. So he thought: ‘somebody made me too’. So humans made up gods. But they said, ‘the gods made everything’. I know better. I am older than all your gods. I saw how man made himself. He has a long way to go yet. He is sometimes very cruel even to other men.”

अब शाम ढलने लगी थी। राम की मां एक टोकरी में लाल फूल लेकर आई। उसने टोकरी को तालाब के किनारे रखा। फिर उसने बूढ़े पीपल के पेड़ के सामने झुककर उसका नमन किया। राम की मित्र-मंडली वहां से खिसक ली। मां ने कहा, "राम, इधर आओ। जल्दी तैयार हो। आज रात को नन्दी को जलूस में सबसे आगे रहना है। तुम्हें पता है कि नन्दी अन्य गाय-बैलों से पहले पैदा हुआ था। चलो, नन्दी को घर ले चलकर उसे सजाएं।" □



It was getting on to dusk. Rama's mother came up with a basket of fresh red flowers. She put the basket down by the spring. Then she bowed down to the old Bo-tree. Rama's friends left quietly. Mother said: "Rama, come. Get ready. Nandi has to lead the great procession to-night. You know he came before all the other cattle. Come, let us take Nandi home and decorate him." □